राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद सम्पन्न
मन की निर्मलता ही भक्ति है - प्रो. चारण

घुमन्तु दर्पण

डूंगरपुर (सादिक अली)। **डूंगरपुर।** साहित्य अकादेमी एवं राजस्थान बाल कल्याण समिति के संयुक्त तत्वावधान में ह्यराजस्थानी भक्ति परंपरा एवं वागड़ अंचलह्ल विषयक राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन स्थानीय साईं पैलेस होटल में हुआ। मुख्य वक्ता ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रो. अर्जुनदेव चारण ने कहा कि जब मनुष्य अहंकार शून्य हो जाता है, तब उसका मन निर्मल होता है और यही निर्मलता ही सच्ची भक्ति है। उन्होंने भारतीय और राजस्थानी भक्ति परंपरा पर विस्तृत विचार रखते हुए महर्षि नारद को आदर्श भक्त बताया। उपेंद्र अणू ने वागड़ अंचल की गौरवशाली भक्ति परंपरा का

उल्लेख करते हुए मावजी महाराज, गोविंद गुरु और गवरी बाई जैसे संतों के योगदान को रेखांकित किया। समारोह में साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार की घोषणा पर भोगीलाल पाटीदार का अभिनंदन किया गया। दो सत्रों में कृष्ण, राम, कल्लाजी और आदिवासी भक्ति साहित्य पर आलेख प्रस्तुत किए गए। समापन अवसर पर कवि दिनेश पांचाल ने वागड़ की भक्ति परंपरा को प्रेम और लोककल्याण की भावना से ओतप्रोत बताया, वहीं वरिष्ठ साहित्यकार ज्योतिपुंज ने इसे प्रकृति संरक्षण और मानवता से जुड़ी परंपरा कहा। आयोजन में डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित, डॉ. प्रियंका चौबीसा, विपुल विद्रोही सहित अनेक साहित्यकार, शोधार्थी एवं भाषा प्रेमी उपस्थित रहे।